अध्याय – द्वितीय
संबंधित साहित्य का
पुनरावलोकन

अध्याय - द्वितीय
संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.0 भूमिका

संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित पुस्तकें, ज्ञानकोष, पत्र, पत्रिकाएं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है। जिनसे शोध के दौरान अनुसंधानकर्ता को अपनी शोध समस्या का चयन परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करना एवं कार्य आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

2.1 साहित्य पुनरावलोकन का महत्व व योगदान

- शोध के गुणात्मक तथा भावात्मक विश्लेषण में शोधकर्ता को नई दिशा देना।

  शोध हेतु विचार व्यवस्था तथा परिकल्पनाएं प्रदान करना जो समस्या चुनाव में उपयोगी है।
- शोध समस्या के समाधान हेतु उचित विधि प्रक्रिया, तथ्यों के साधन तथा सांख्यिकी तकनीकी का सुझाव देना है।
- परिणामों के विश्लेषण, निष्कर्षों के तुलनात्मक अध्ययन को निर्धारित करना।
- अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है। व संबंधित क्षेत्र में हुये कार्यों की सूचना देता है।

शोध से संबंधित साहित्य इस शोध की समस्या से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित है। इसे निम्न दो भागों में बॉटा गया है :-

- पूर्व में किये गये शोध
- वर्तमान में किये गये शोध

2.2 पूर्व में किये गये शोध :

1. मुत्थैया, नायडू तथा रंगा (1974) में अपने शोधकार्य बाल विकास के कार्यक्रमों का मूल्यांकन में आंध्रप्रदेश के बालकों के विकास के लिए किए गए कार्यों का मूल्यांकन किया। इस अध्ययन के परिणाम इस प्रकार है। स्वास्थ्य कार्यक्रम व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहे है। गांवों में उन्हें जो सुविधा प्राप्त हो रही है। वे उसका ठीक ढंग से उपयोग कर रहे है। महिला मंडल एवं बालवाडियां तथा आंनवाडियों ठीक से कार्य नही कर रही है।

2 **राष्ट्रीय शिक्षा नीति** (1986) के द्वारा एकीकृत बाल विकास परियोजना को ई.सी.सी.ई का सबसे बडा कार्यक्रम कहा गया है। इससे सभी आंगनवाडियों सम्मिलित है। इनके कार्यकर्ताओं को एक माह तक आंगनवाडी में प्रशिक्षण देना चाहिये। प्रशिक्षण देने के लिए विभिन्न शिक्षण समाग्री का उपयोग किया जाना चाहिये। प्रत्येक आंगनवाडी में बालकों के लिए चित्रों की पुस्तकें, खेल सामग्री, पोस्टर आदि को समय समय पर बदला जाना चाहिये। इन्हें दुबारा बनाना चाहिये। इन प्रशिक्षणार्थियों द्वारा पर्यवेक्षकों को पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए रिफ्रेशर कोर्स करवाना चाहिये, ये कोर्स प्री सर्विस ट्रेनिंग या इन सर्विस ट्रेनिंग के रूप में हो सकते है।

3 **तारापुर देशपांडे तथा पंडसे** (1986) के द्वारा समेकित बाल विकास सेवा के अनौपचारिक घटक का अध्ययन किया गया है। इसमें 154 आंगनवाडियों का चयन किया गया। इसमें हायर रेटिंग आंगनवाडी तथा लोअर रेटिंग आंगनवाडियां व आई.सी.डी.एस. के अंतर्गत न आने वाले संस्थानों के कार्यो की तुलना की गई। व्यक्तिगत सूचनाएं पूर्ण रूप से गति का विकास धारणा बनाना तत्परता कौशल विभिन्नीकरण भाषा तथा सामाजिक कौशल आदि के कार्यों की तुलना की गई। हायर रेटिंग आंगनवाडी तथा आई.सी.डी.एस के अलावा अन्य संस्थाओ का कार्य लोअर रेटिंग आंगनवाडी से बेहतर रहा है।

4 **शेषम्मा तथा करणम** (1986) ने पूर्व प्राथमिक शिक्षकों की पूर्व प्राथमिक कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का निर्धारण किया गया। तीन समूह 35 आंगनबाडी 10 नर्सरी स्कूल तथा 2 लौबोरेट्री स्कूल लिए गए, इनमें मिलने वाली खेल सुविधाओं में अंतर ज्ञात किया गया। सभी विद्यालयों के शिक्षकों ने खेल को आवश्यक माना आंगनबाडी में 97 प्रतिशत खेल को आवश्यक बताया 80 प्रतिशत रेट खेल व आर्गनाइज्ड खेलों के प्रति रूचि दिखाई। पूर्व प्राथमिक मूल्यांकन स्केल के अंको के आधार पर आंगनवाडी को 2 श्रेणियों में विभाजित किया गया। 25 को "बी" श्रेणी तथा 8 को "सी" श्रेणी प्राप्त हुई।

5 **मुरलीधरण एवं पंकजम** (1988) के द्वारा पूर्व विद्यालय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न प्रतिभाओं का बालकों पर प्रभाव का मूल्यांकन किया गया। यह अध्ययन गांधीग्राम तमिलनाडू में किया गया। 28 बालक 3-5 आयु वर्ग के थे। 32 बालकों को रेडम उस विद्यालय से लिया गया। जहां शिक्षको को 2 वर्ष, 1 वर्ष, 6 माह तथा 4 माह का आंगनवाडी प्रशिक्षण दिया गया था। उन बालको के

बौद्धिक तथा भाषा विकास के अध्ययन में सर्वाधिक अंक आए। जिनके शिक्षकों को 2 वर्ष का प्रशिक्षण दिया गया था। दो वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षकों के छात्र तथा आंगनवाडी के बालकों में बहुत कम अंतर आता है। अतः यह सार्थक नही है। आंगनवाडी कार्यकर्ता यदि कुशलतापूर्वक प्रशिक्षित हो तो वे अधिक प्रभावी प्राथमिक कार्यक्रम प्रदान कर सकते है।

6 **बीना, सुनीता एवं हंसा** (1989) ने बड़ौदा आई.सी.डी.एस. के अनौपचारिक पूर्व प्राथमिक घटक का अध्ययन किया। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य था हायर और लोअर योजनाओं के बालकों के विकास की तुलना करना तथा जो बालक आंगनवाडी नही जा रहे, उनकी प्रतिभा का अध्ययन करना। 60 बालक 3-6 वर्ष के आंगनबाडी से चुने गये तथा 2 वे थे जिन्हें पूर्व प्राथमिक शिक्षा नही मिली थी। आंगनबाडी को उच्च व निम्न श्रेणी में बांटा गया। इन श्रेणियों के कार्यकर्ताओं को पालकों की देखभाल एवं विकास के बारें में अवचेतना तथा इससे संबंधित कार्यो की तुलना की गई। दोनों ही समूहों की क्रियाओ का स्तर लगभग समान रहा तथा इन आंगनवाडी के बालकों की क्रियाओं में भी कोई अंतर नही दिखाई दिया। एक्सपोज्ड बालकों पर आंगनवाडी के अनुभवों को सार्थक प्रभाव रहा।

2.3 वर्तमान में किये गये शोध

7 **खोसला** (1991) - के रिफ्रेशर कोर्स इन प्री स्कूल एज्युकेशन फार आंगनवाडी वकर्सः- इन मूल्यांकन का अध्ययन किया गया। जिसमें आंगनवाडी कार्यकर्ताओं को दी जाने वाली रिफ्रेशर ट्रेनिंग को लेकर अध्ययन किया गया है। इन कार्यक्रमों की प्रभावित के बारे में अध्ययन तथा कितने कार्यक्रम अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हुयें। कार्यकर्ताओं की पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत अत्याधिक जानकारी ज्ञात हुई वह अधिक सहभागी साबित हुई। वातावरण से ही संसाधनों का उपयोग कर विभिन्न गतिविधियों क़ा ज्ञान प्राप्त हुआ। माताओं व सहायक लोगों को शामिल करने से अधिक प्रभावी रहेगा अत्यधिक क्रियाकलाप व अन्य गतिविधियों के अनुपात में वृद्धि हुई । ट्रेनिंग के बाद ही कार्यकर्ताओं को इन गतिविधि व शिक्षण समाग्री का पता चला तथा उसने उपयोग भी किया।

8 **रीजनल सेंटर** (1991) द्वारा- आई.सी.डी.एस बिहार व मध्यप्रदेश में एक अध्ययन किया आई.सी.डी.एस कार्यक्रम की उपलब्धि व अनुपयोग का अध्ययन किया गया जिसमें बिहार व मध्यप्रदेश के 13 व 16 जिलों का आंगनबाडी को लिया गया।

आंगनवाडी सेंटर घर के एक कमरें में है व बहुत छोटे थे आंगनवाडी कार्यकर्ताओं की शैक्षिक पृष्ठभूमि की समस्या थी। बहुत बडी संख्या में पद खाली थे। शब्दों के आकार की अध्ययन करने वाली विधा में भी शहरी व ग्रामीण में अंतर था। इसमें कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं को स्वास्थ्य कार्यक्रम के बारे में जानकारी न होने के कारण उनकी भूमिका सार्थक नही थी।

9 **यशोधरा** (1991) ने पूर्व विद्यालय शिक्षा के विभिन्न पहलूओं के संदर्भ में अभिभावकों व शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया जिसमें 115 आंगनवाडी कार्यकर्ताओं को लिया गया था। जो ग्रामीण व शहरी दोनों केन्द्रों से थे। 8 पर्यवेक्षकों और 345 वेनिफिशरीज ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के अंतर मुख्य बिन्दू थे। शहरी आंगनवाडी के कार्यकर्ताओं में कम जॉब स्टेज था।

10. **सूद,** (1992) ने "समेकित बाल विकास योजना ICDS कार्यक्रम में पूर्व विद्यालयी घटकों का मूल्यांकन" किया इसके उददेश्य थे - (1) ICDS तथा गैर ICDS के पूर्व प्राथामिक विद्यालय के बच्चो के समूहों के विकास का मूलनात्मक मूल्यांकन करना । (2) ICDS तथा गैर ICDS समूहों के कक्षा 1 व 2 का बच्चो के विद्यालय में प्रदर्शन का तुलनात्मक मूल्याकन करना (3) ICDS तथा गैर ICDS के समूह की माताओं में स्वास्थय तथा पोषण की आवश्यकताओं तथा पूर्व प्राथमिक शिक्षा के मूल्य के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना इस अध्ययन के लिए 64 पूर्व प्राथमिक विद्यालयी बच्चे तथा उनकी माताओं तथा कक्षा 1 व 2 के 40 बच्चों को ICDS समूह में लिया जो एक वर्ष से अधिक आंगनवाड़ी में रहे हो जबकि गैर ICDS समूह में 16 पूर्व प्राथमिक विद्यालय बच्चों तथ उनकी माताओं तथा प्राथमिक विद्यालयी बच्चों तथा उनकी माताओ तथा कक्षा 1 व 2 के 40 बच्चों को शमिल किया जिन्होने पूर्व प्राथमिक शिक्षा गृहण नही की है आंगनवाड़ी का अवलोकन पूर्व विद्यालयी बच्चो के लिए विकास मापन हेतु चिन्हांकन सूची शिक्षको के लिए निर्धारण मापनी तथा माताओं के साक्षात्कार द्वारा संबंधित जानकारी एकत्रित की गई । प्रमुख निष्कर्ष -(1) पूर्व प्राथमिक विद्यालय के बच्चों का सर्वागीण विकासात्मक स्तर का ICDS सेवाएं बढ़ाती है । (2) आंगनवाड़ी से निकले बच्चे प्राथमिक विद्यालय में अन्य बच्चों से बेहतर प्रदर्शन करते है । (3) ICDS सेवाएं बच्चों के पोषण आवश्वकताओं तथा पूर्व प्राथमिक शिक्षा के मूल्यों के प्रति माताओं की जागरूकता का स्तर बढ़ाती हैं।

11. **पलैया** (1993) के द्वारा आंगनबाडी कार्यकर्ताओं की अविरत शैक्षिक आवश्यकताओं का अध्ययन किया गया। जिसमें 68 आंगनवाडी कार्यकर्ता को लिया गया जो भोपाल के थे। साक्षात्कार लिया गया इसके उद्देश्य थे। कार्यकर्ताओं के शिक्षात्मक दायित्व बाल स्वास्थ्य दायित्व तथा सामुदायिक

उत्तरदायित्व संबंधी अवचेतना का अध्ययन तथा उनके लिए सेवा कालीन प्रशिक्षण आवश्यकताओं का निर्धारण करना। आंगनवाडी कार्यकर्ताओं की वर्तमान एवं अपेक्षित क्षमताओं में बहुत अंतर है जिसके कारण ये कार्यकर्ताओं के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण में क्रियाओं ने खेल का मुख्य स्थान देना चाहिये आंगनवाडी कार्यकर्ता अपने आपको अध्यापक व्यवसाय की श्रृंखला मानते है और निहित समय पर ही आंगनवाडियों का संचालन करते है परन्तु सत्य यह है कि आंगनवाडी कार्यकर्ता का कार्यक्षेत्र कल्याण सेवा और समुदाय संपर्क से जुड़ा है। अतः प्रशिक्षण एव कार्य योजना बनाने समय इसका भी ध्यान रखना चाहिए।

12. **दिनकर** (2000) ने ''भोपाल शहर में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य का आलोचनाओं अध्ययन'' निम्नलिखित उद्देय से कियाः- (1) पूर्व विद्यालय शिक्षा के विकास ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना। (2) भोपाल शहर से पूर्व विद्यालयों के क्रियान्वयन का अध्ययन करना। (3) पूर्व विद्यालयी कार्यक्रम पर दिये गये राष्ट्रीय सुझावों के संदर्भ में शिक्षकों तथा विद्यालयप्रमुख की प्रतिक्रियाओं का आलोचनात्मक अध्ययन करना। (4) पूर्व प्राथमिक विधालयों में उपलब्ध सेवाओं का अध्याय करना। (5) पूर्व विद्यालयके प्रोफाइल का अध्ययन करना। (6) पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के प्रभावपूर्ण क्रियान्वयन हेतु सुझाव देना। इस अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने भोपाल शहर के चुने हुये 6 विद्यालयों को न्यादर्श में शामिल किया शिक्षकों विद्यालयों प्रमुख तथा छात्र से प्रश्नावली द्वारा तथा अवलोकन अनुसूचि द्वारा संबंधित जानकारी एकत्रित की गई। मुख्य निष्कर्ष है (1) 50 से 80 प्रतिशत विधालयों में भौतिक सुविधाएं उपलब्ध है। (2) 50 प्रतिशत विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षक नियुक्त थे लेकिन किसी ने भी पूर्व प्राथमिक शिक्षा हेतु विशेष प्रशिक्षण नही लिया था। (3) 50 प्रतिशत विधालयों में वाचन लेखन पर जोर दिया गया।

13 **सत्यार्थी** (2005) ने ''ग्वालियर जिले में पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के क्रियान्वयन का अध्ययन'' निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ किया- पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के विभिन्न पहलूओं के क्रियान्वयन का (1) कार्यकर्ताओं के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन (2) अभिभावको के परिप्रेक्ष्य में अध्ययनन करना। (3) पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यलय के संबंध में कार्यकर्ताओं व अभिभावकों तुलनात्मक अध्ययन करना। (4)मूलभूत संरचनाओं एवं क्रियान्वयन का निरीक्षणात्मक अध्ययन करना इसके लिए ग्वालियर जिले के 60 आंगनवाडी को न्यादर्श में शामिल किया गया। अध्ययन संबंधी जानकारी प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा निरीक्षण अनुसूचि द्वारा एकत्रित की गई। मुख्य निष्कर्ष है (1) मूलभूत संरचना तथा

प्राप्त सामग्री का स्तर संतुष्टीजनक नही था। (2) सभी कार्यकर्ता प्रशिक्षित थे। (3) सभी कार्यकर्ता तथा अभिभावक पोषक आहार की गुणवत्ता से असंतुष्ट पाये गये। (4) 80 प्रतिशत कार्यकर्ता बदलाव चाहते थे।

14. सिंह (2006) में "भुवनेश्वर शहर में प्रारंभिक बाल शिक्षा के वर्तमान स्तर का अध्ययन" निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ किया - (1) भुवनेश्वर के ई.सी.ई. केन्द्रों में प्रदान की जाने वाली भौतिक सुविधाओं का अध्ययन करना। (2) इन ई.सी.ई. केन्दों में कार्यरत शिक्षकों की न्यूनतम योग्यता ज्ञात करना। (3) इन ई.सी.ई केन्द्रों में उपयोग किये जाने वाले उपकरणों तथा सामग्री का अध्ययन करना। (4) इन ई.सी.ई. केन्दों में अपनाई जाने वाली विधियों तथा पाठ्यक्रम का अध्ययन करना। (5) ई.सी.ई के संदर्भ में शिक्षकों तथा अभिभावकों के दृष्टिकोण ज्ञात करना। इस अध्ययन के लिए अपने 2 पर शहर के 10 ई.सी.ई केन्द्रों को न्यादर्श में शामिल किया गया तथा अवलोकन अनुसूची तथा शिक्षकों से साक्षात्कार व प्रश्नावली द्वारा जानकारी एकत्रित की गई इनके मुख्य बिन्दु है (1) 60 प्रतिशत ई.सी.ई केन्द्रों का स्तर एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा स्थापित मानको के अनुरूप है। (2) 40 प्रतिशत ई.सी.ई केन्द्रों में गुणवत्ता युक्त शिक्षण नही होता।

15. वर्मा (2007) के "प्रारंभिक बाल शिक्षा (ई.सी.ई) कार्यक्रम के वर्तमान परिदृश्य पर एक अध्ययन" किया इसके निष्कर्ष निम्नलिखित है। (1) 30% पूर्व प्राथमिक विद्यालय एन.सी.ई. आर.टी. के इस मापदण्ड की पूर्ति करते थे। जिसके अनुसार, वाहन सुविधा के बिना विद्यालय बच्चों के घर से 1/2 से 1 कि.मी. तथा वाहन सुविधा के साथ 1 से 78 कि.मी. के दायरे में होना चाहिए। (2) 90% विद्यालय बच्चो को सुरक्षा प्रदान करते है। (3) 60- 70% विद्यालय में बच्चो के भाषा विकास तथा आत्म अभिव्यक्ति के विकास हेतु गीत व कविता का उपयोग किया जाता है। (4) 80% विद्यालयों में वाचन हेतु अक्षर ज्ञान पर तथा लेखन क्रिया पर जोर दिया जाता है। (5) 20: विद्यालयो में प्रत्येक माह मूल्याकंन किया जाता है। (6) 30% विद्यालय के शिक्षक अभिभावक से सम्पर्क करते है। (7) 50 – 60 % विद्यालयों में सामूहिक खेल व टिफिन शेयरिंग क्रियाओं द्वारा बच्चों के सामाजिक तथा भावनात्मक विकास किया जाता था।

संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से ज्ञात होता है कि बाल विकास के कार्यक्रम का मूल्यांकन, समेकित बाल विकास सेवा के अनौपचारिक घटकों का अध्ययन, पूर्व प्राथमिक शिक्षकों की पूर्व प्राथमिक कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, समेकित बाल विकास योजना के पूर्व विद्यालयी घटकों का

अध्ययन, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की अविरत शैक्षिक आवश्यकताओं का अध्ययन, भोपाल जिले तथा ग्वालियर जिले की पूर्व प्राथमिक शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य आदि पर शोध कार्य हुये है। परंतु होशंगाबाद जिले में चल रहे आंगनवाड़ी कार्यक्रम का अध्ययन अभी तक नहीं हुआ है। इसलिए इस शोध में होशंगाबाद जिले की 20 आंगनवाड़ियों का अध्ययन किया जा रहा है।

उपरोक्त अध्ययनों का अध्ययन करने से पता चलता है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आंगनवाड़ी के अध्ययन क्षेत्र में अधिक तथा व्यापक पैमाने पर शोध कार्य नहीं हुआ है। पूर्व में जो भी शोध कार्य हुए है। वे प्रस्तुत लघुशोध से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित नहीं है। उपरोक्त शोधों को प्रस्तुत शोध कार्य के लिए पृष्ठभूमि हेतु अध्ययन किया गया है।